

अंबाला जिले के बराड़ा सामुदायिक विकास खंड में जलभराव तथा जल प्रदूषण का अवलोकन

किरण पाल¹, डॉ. सत्यवीर यादव²

¹शोधार्थी, भूगोल, सामाजिक विज्ञान विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर- 124021, रोहतक (हरियाणा)

²प्रोफेसर, भूगोल, सामाजिक विज्ञान विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर- 124021, रोहतक (हरियाणा)

सार

जलभराव ग्रामीण समुदायों के लिए गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न करता है क्योंकि इससे दैनिक जीवन बाधित होता है, पेयजल स्रोत दूषित होते हैं और स्वास्थ्य जोखिम बढ़ते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में हरियाणा के अंबाला जिले के बराड़ा सामुदायिक विकास खंड के पाँच चयनित गाँवों में जलभराव की समस्या की जाँच की गई है, जिसमें सामुदायिक धारणाओं, प्रथाओं और संस्थागत प्रतिक्रिया पर ध्यान केंद्रित किया गया है। एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग करके, बाढ़ग्रस्त नालों, जल स्रोतों के दूषित होने और निवासियों द्वारा अपनाए गए निवारक उपायों के प्रभाव का आकलन करने के लिए 50 घरों से प्राथमिक आँकड़े एकत्र किए गए। परिणामों से पता चलता है कि 94 प्रतिशत उत्तरदाता पक्के घरों में रहते हैं, लगभग 18 प्रतिशत ने मानसून के दौरान अपने घरों में पानी आने की सूचना दी, जबकि पाइप से जलापूर्ति (58 प्रतिशत) और हैंडपंप (38 प्रतिशत) प्राथमिक पेयजल स्रोत हैं, 16 प्रतिशत ने अपने आसपास के क्षेत्र में बार-बार बाढ़ आने की बात कही, जिससे प्रदूषण और पेयजल प्रदूषित होने का खतरा पैदा होता है। 66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि रुका हुआ पानी स्वास्थ्य संबंधी खतरों को बढ़ाता है, और 64 प्रतिशत ने नियमित रूप से नालियों की सफाई की आवश्यकता पर जोर दिया, हालाँकि केवल 42 प्रतिशत ने ही एजेंसियों के निरंतर हस्तक्षेप की बात कही। पानी उबालने या क्लोरीनीकरण जैसी निवारक प्रथाओं को स्वीकार किया गया, लेकिन उन्हें समान रूप से लागू नहीं किया गया। अध्ययन का निष्कर्ष है कि जलभराव एक बुनियादी ढाँचागत और व्यावहारिक चुनौती है, जिसके लिए सरकारी एजेंसियों और स्थानीय समुदायों के बीच समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। बेहतर जल निकासी व्यवस्था, समय पर रखरखाव और सुरक्षित जल प्रथाओं पर जागरूकता अभियान जलभराव से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

मुख्य शब्द: बाढ़, जलभराव, नालियाँ, जागरूकता, स्वच्छ जल।

परिचय

भारत के कई ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेष रूप से हरियाणा जैसे राज्यों में, जलभराव एक गंभीर पर्यावरणीय और जन स्वास्थ्य चिंता का विषय बन गया है, जहाँ मानसूनी बारिश अक्सर कृषि क्षेत्रों, गाँव की नालियों और आवासीय क्षेत्रों में बाढ़ का कारण बनती है। प्रभावित क्षेत्रों में, अंबाला जिले के बराड़ा सामुदायिक विकास खंड में अपर्याप्त जल निकासी सुविधाओं, गाँव के बुनियादी ढाँचे के खराब रखरखाव और कुछ बस्तियों के निचले इलाकों में होने के कारण मानसून के मौसम में बार-बार जलभराव होता है। ऐसी स्थितियाँ न केवल दैनिक जीवन को बाधित करती हैं, बल्कि पेयजल स्रोतों की उपलब्धता और सुरक्षा को भी सीधे तौर पर प्रभावित करती हैं।

पेयजल मुख्य रूप से हैंडपंप, पाइप लाइन, कुओं और टैंकरों से प्राप्त होता है। हालाँकि, जब इन स्रोतों के आसपास जलभराव होता है, तो प्रदूषण का खतरा काफी बढ़ जाता है, जिससे अक्सर दस्त, हैजा और पेचिश जैसी जलजनित बीमारियाँ फैलती हैं। नालियों के आसपास जमा पानी और खुले में जलभराव की क्रिया इस समस्या को और बढ़ा देती है। सामुदायिक धारणाएँ, जागरूकता का स्तर और निवारक उपाय जैसे उबालना, क्लोरीनीकरण, हाथ धोना और उचित भंडारण, बचाव में मदद करते हैं।

यह अध्ययन इस बात की जाँच करता है कि अंबाला के बराड़ा सामुदायिक विकास खंड में ग्रामीण परिवारों में जलभराव पेयजल स्रोतों, भंडारण प्रथाओं और स्वास्थ्य जागरूकता को कैसे प्रभावित करता है। सामुदायिक प्रतिक्रियाओं और धारणाओं का विश्लेषण करके, यह अध्ययन बाढ़ और प्रदूषण की दोहरी चुनौतियों को कम करने के लिए बेहतर जल निकासी प्रबंधन, स्वास्थ्य शिक्षा और एकीकृत ग्रामीण जल आपूर्ति रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

अध्ययन का महत्व

अंबाला के बराड़ा सामुदायिक विकास खंड के जलभराव वाले क्षेत्रों में जलजनित रोगों की भूमिका पर यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पर्यावरण, स्वास्थ्य और विकास के महत्वपूर्ण अंतर्संबंध को संबोधित करता है। बराड़ा सामुदायिक विकास खंड खराब जल निकासी, भारी मानसूनी वर्षा और अनियोजित भूमि उपयोग के कारण जलभराव एक आवर्ती चुनौती के रूप में उभरा है, जिससे रोगाणुओं के लिए प्रजनन स्थल बनते हैं और डायरिया, टाइफाइड, हेपेटाइटिस और अन्य जलजनित बीमारियों के प्रकोप में योगदान होता है। जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य पर राष्ट्रीय कार्यक्रमों (WaSH) के बावजूद, बराड़ा जैसे संवेदनशील सामुदायिक विकास खंडों पर केंद्रित स्थानीय शोध दुर्लभ है। यह अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इस बात का अनुभवजन्य प्रमाण प्रदान करता है कि कैसे जलभराव ग्रामीण परिवेश में रोगियों की संख्या, स्वास्थ्य व्यय और सामुदायिक कल्याण को सीधे प्रभावित करता है। घरेलू स्तर के आंकड़ों का उपयोग करके, यह जोखिम के स्वरूप, सामाजिक-आर्थिक निर्धारकों और जागरूकता में अंतराल की पहचान करता है, जिससे पर्यावरणीय खतरों और सार्वजनिक स्वास्थ्य परिणामों के बीच संबंध मजबूत होता है। इसके नीति निर्माताओं, स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों और पंचायतों को बेहतर जल निकासी, सुरक्षित जल आपूर्ति और सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रमों जैसे लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता करेंगे। इसके अलावा, यह अध्ययन जलजनित रोगों, स्वास्थ्य और स्वच्छ जल एवं स्वच्छता से संबंधित सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के व्यापक संदर्भ में रखकर पर्यावरणीय स्वास्थ्य भूगोल पर अकादमिक चर्चा में योगदान देता है।

साहित्य की समीक्षा

साहा और अन्य (2024), ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाले एनएफएचएस-5 आँकड़ों का विश्लेषण किया ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि बार-बार बाढ़ के संपर्क में आने से ग्रामीण भारत में पांच साल से कम उम्र के बच्चों में पेचिश का खतरा कैसे बढ़ जाता है। 2018 और 2021 के बीच तीन बार बाढ़ के संपर्क में आने वाले बच्चों में और संपर्क में न आने वाले बच्चों की तुलना में पेचिश की संभावना 34 प्रतिशत अधिक थी, जो बार-बार होने वाले जलप्लावन के संचयी स्वास्थ्य बोझ को रेखांकित करता है। अध्ययन बराड़ा से अत्यधिक प्रासंगिक रास्तों पर प्रकाश डालता है-दूषित पेयजल स्रोत, असुरक्षित जल भंडारण और मानसून के दौरान अत्यधिक सर्तकता रखने पर ध्यान देता है। यह बाढ़ के दौरान WaSH निर्देशों को बढ़ावा देते हैं। समीक्षा इस बात पर जोर देती है कि बाढ़ के बाद आई बीमारियों में अल्पकालिक उछाल आम है, लेकिन मध्यम अवधि के प्रभाव भी बने रहते हैं जहां जल निकासी अपर्याप्त रहती है। बराड़ा सामुदायिक विकास खंड के लिए, अध्ययन जलभराव के बाद के स्वास्थ्य परिणामों, दोनों (≤ 2 सप्ताह) और विस्तारित (कई महीनों तक) को मापने का समर्थन करता है, और यह स्रोत सुरक्षा धारणाओं, भंडारण/उपचार और जल निकासी स्थितियों पर प्रकाश डालता है।

मजूमदार और अन्य (2024), ने एक दक्षिण एशियाई गांव (भारत) में एडीडी के प्रकोप की रिपोर्ट की, जिसमें चार दिनों (31 दिसंबर, 2022-3 जनवरी, 2023) में एक समान स्रोत स्वरूप था। बराड़ा अध्ययन के लिए, यह जलभराव के दौरान/बाद में महामारी, देखभाल की तलाश और घरेलू जल उपचार के व्यवहारों को समझने के लिए एक ठोस ढाँचा प्रदान करता है। प्राथमिक प्रतिक्रियाओं (जैसे, ओआरएस वितरण) और अधिकारियों द्वारा क्लोरीनीकरण या नालियों की सफाई की गई या नहीं, जैसे प्रश्नों को शामिल करने का भी समर्थन करता है।

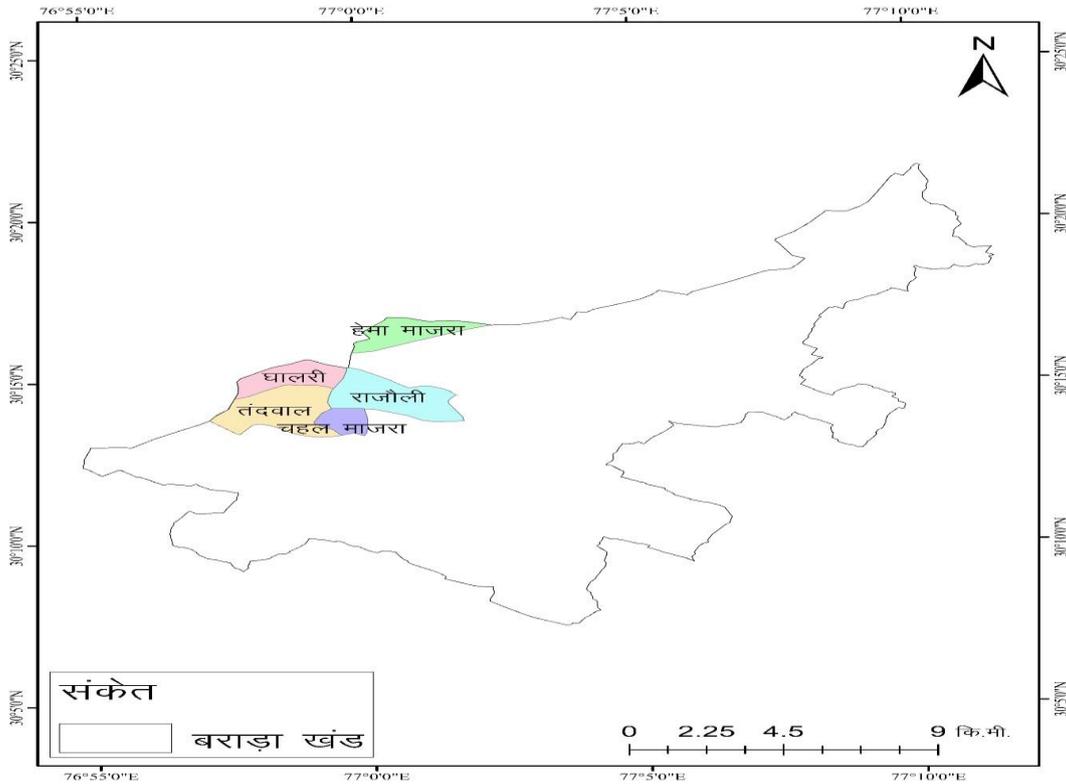
हरियाणा की जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य पर राज्य कार्य योजना (2024-2025) जल जनित रोगों के प्रकोपों का दस्तावेजीकरण करती है और जिला-स्तरीय अनुकूलन/स्वास्थ्य-प्रणाली उपायों को रेखांकित करती है, जबकि लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की जल गुणवत्ता पुस्तिका (दिसंबर 2024) संदूषण जोखिमों और निगरानी प्रणाली का विवरण देती है। नियमित निगरानी, मानसून की तैयारी, क्लोरीनीकरण मानक और सामुदायिक सहभागिता, ये सभी मिलकर बराड़ा सामुदायिक विकास खंड के नीतिगत परिवेश को आकार देते हैं। सरकारी कार्यों (नालियों की सफाई, क्लोरीनीकरण), आपूर्ति गुणवत्ता से संतुष्टि और रुके हुए पानी से निकटता पर आपकी प्रश्रवली इन दस्तावेजों के अनुरूप हैं और अंबाला में मार्गदर्शन और जमीनी स्तर पर किए गए अभ्यास के बीच कार्यान्वयन अंतराल का आकलन करने में मदद कर सकते हैं। (राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र, हरियाणा)

वेन्नू और अन्य (2024), असुरक्षित पेयजल, खराब स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ते रोग भार से जोड़ने वाले भारतीय साक्ष्यों का संश्लेषण करता है। समीक्षा इस बात पर प्रकाश डालती है कि मानसून से संबंधित जलभराव के दौरान कैसे अनियमित आपूर्ति, अपर्याप्त भंडारण और बंद नालियाँ रोगाणुओं के संपर्क को बढ़ाती हैं। यह एकीकृत हस्तक्षेपों (स्रोत संरक्षण, उपयोग के स्थान पर उपचार, व्यवहार परिवर्तन) और बेहतर जोखिम संचार की माँग करता है। बराड़ा के लिए, यह भंडारण कंटेनरों के प्रकार, धुलाई की आवृत्ति, उपचार की नियमितता और हाथ धोने की सुविधाओं के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक स्तरीकरण पर सर्वेक्षण की गहराई को उचित ठहराता है जो WASH क्रियाओं को अपनाने का समर्थन करें। यह संश्लेषण आपके घरेलू स्तर के निष्कर्षों की व्याख्या के लिए एक मजबूत वैचारिक आधार प्रदान करता है।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान शोधपत्र हरियाणा के अंबाला जिले में स्थित बराड़ा सामुदायिक विकास खंड पर केंद्रित है, जो राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक क्षेत्र है। भौगोलिक दृष्टि से, अंबाला 30°11' उत्तर से 30°26' उत्तरी अक्षांश और 76°30' पूर्व से 77°12' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है, और उत्तर में पंजाब और उत्तर-पूर्व में हिमाचल प्रदेश के साथ सीमा साझा करता है। बराड़ा अंबाला के प्रशासनिक सामुदायिक विकास खंडों में से एक है, जिसमें मुख्यतः ग्रामीण बस्तियाँ हैं जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। यह क्षेत्र सिंधु-गंगा के जलोढ़ मैदान में स्थित है, जिसकी विशेषता उपजाऊ मिट्टी है, लेकिन इसकी निचली स्थलाकृति और अपर्याप्त जल निकासी संरचना के कारण मौसमी जलभराव होता है।

बराड़ा खंड में उपोष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु पायी जाती है, जिसमें गर्म ग्रीष्मकाल, जुलाई से सितंबर तक सघन वर्षा ऋतु और ठंडी सर्दियाँ होती हैं। औसत वार्षिक वर्षा लगभग 1100 मिमी होती है, जिसका अधिकांश भाग मानसून के दौरान होता है, जिससे अक्सर कृषि क्षेत्रों, सड़क किनारे की नालियों और गाँव के आसपास के क्षेत्रों में पानी जमा हो जाता है। ये परिस्थितियाँ जलजनित रोगाणुओं के प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण बनाती हैं। इस सामुदायिक विकास खंड का सामाजिक-आर्थिक स्वरूप छोटे और सीमांत किसानों, मजदूरों और अर्ध-शहरी परिवारों के मिश्रण को दर्शाता है, जिससे यहाँ की आबादी स्वास्थ्य जोखिमों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील हो जाती है। यह भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक संदर्भ बराड़ा सामुदायिक विकास खंड को जलजनित रोगों के बढ़ने में जलभराव की भूमिका का अध्ययन करने के लिए एक उपयुक्त स्थान बनाता है।



स्रोत: शोधार्थी द्वारा आर्क. जी.आइ.एस. की सहायता से निर्मित

मानचित्र 1: अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोधपत्र के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. बराड़ा सामुदायिक विकास खंड में मानसून के मौसम के दौरान घरेलू जल स्रोतों, भंडारण प्रथाओं और जलभराव के संपर्क के बीच संबंधों का विश्लेषण करना।
2. जलभराव वाले क्षेत्रों में जलजनित रोगों के निवारक उपायों के बारे में सामुदायिक जागरूकता और धारणाओं का आकलन करना।

कार्यप्रणाली

वर्तमान अध्ययन बराड़ा के सामुदायिक विकास खंड में किया गया है, मानसून के मौसम में जहाँ जलभराव एक आवर्ती समस्या के रूप में उभरा है। प्राथमिक आँकड़े एकत्र करने के उद्देश्य से, जलभराव से गंभीर रूप से प्रभावित पाँच गाँवों को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना गया था। प्रत्येक चयनित गाँव से, एक सरल यादृच्छिक नमूनाकरण पद्धति का उपयोग करके दस घरों का चयन किया गया, जिससे सर्वेक्षण के नमूने के रूप में कुल 50 नमूने लिए गए।

प्राथमिक आँकड़े एक सुव्यवस्थित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किए गए, जिसे आवास की स्थिति, पेयजल के स्रोत और भंडारण, जल निकासी प्रणालियों, बाढ़ के जोखिम और जलजनित रोगों और निवारक उपायों के बारे में सामुदायिक जागरूकता के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए डिजाइन किया गया। प्रश्नावली में समस्या की व्यापक समझ सुनिश्चित करने के लिए बंद और खुले दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल किए गए।

घरेलू सर्वेक्षण के दौरान एकत्र किए गए आँकड़ों को प्रतिशत और आवृत्ति वितरण जैसी वर्णनात्मक सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके व्यवस्थित रूप से संकलित, सारणीबद्ध और विश्लेषित किया। विश्लेषण से जलभराव, घरेलू जल प्रथाओं और स्वास्थ्य जोखिमों के बीच संबंधों की पहचान करने में मदद मिली, साथ ही समुदाय द्वारा अपनाए गए जागरूकता और निवारक उपायों के स्तर की भी पहचान हुई।

यह पद्धतिगत ढाँचा सुनिश्चित करता है कि निष्कर्ष जमीनी स्तर के साक्ष्यों पर आधारित हों और बराड़ा खंड के जलभराव वाले गाँवों के परिवारों के अनुभवों को प्रतिबिंबित करें।

परिणाम

बराड़ा सामुदायिक विकास खंड के 50 घरों में किए गए सर्वेक्षण से जीवन स्थितियों, जलभराव और सामुदायिक धारणाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

तालिका 1: पेयजल संबंधी धारणाएँ

क्रम संख्या	धारणाएँ	प्रतिक्रियाएँ	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	घर का प्रकार	कच्चा	1	2
		अर्ध-पक्का	3	6
		पक्का	47	94
2	पेयजल का प्राथमिक स्रोत	पाइप से आपूर्ति	29	58
		हैंडपंप	19	38
		कुओं	2	4
		टैंकर	0	0
3	मानसून में पेयजल स्रोत के आसपास जलभराव	हाँ	8	16
		नहीं	27	54
		कभी-कभी	15	30
4	घर में पेयजल भंडारण का प्रकार	ढका हुआ कंटेनर	13	26
		खुला कंटेनर	3	6
		ओवरहेड टैंक	20	40
		अन्य	14	28
5	क्या आपके क्षेत्र में मानसून से पहले कोई एजेंसी नालियों की सफाई करती है?	हाँ	21	42
		नहीं	16	32
		कभी-कभी	13	26
6	क्या मानसून के मौसम में आपके घर में बाढ़ का पानी आता है?	हाँ	9	18
		नहीं	41	82

स्रोत: शोधार्थी द्वारा प्राथमिक सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित किए गए आंकड़े

आवास के संदर्भ में, अधिकांश उत्तरदाता (94 प्रतिशत) पक्के घरों में रहते हैं, जबकि 6 प्रतिशत अर्ध-पक्के या कच्चे ढाँचों में रहते हैं, जो दर्शाता है कि अधिकांश घरों में अपेक्षाकृत स्थायी आवास हैं। पीने के पानी के प्राथमिक स्रोत के संबंध में, 58 प्रतिशत लोग

पाइप आपूर्ति पर निर्भर हैं, 38 प्रतिशत हैंडपंप का उपयोग करते हैं, और केवल 4 प्रतिशत कुओं पर निर्भर हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में पाइप जल पहुँच की ओर क्रमिक बदलाव को दर्शाता है। हालाँकि, इन स्रोतों के आसपास बाढ़ का जल चिंता का विषय बन जाता है। जबकि 16 प्रतिशत ने बताया कि उनके जल स्रोत मानसून के दौरान हमेशा जलमग्न हो जाते हैं, 54 प्रतिशत ने कहा कि उनके साथ ऐसा नहीं होता, और 30 प्रतिशत ने संकेत दिया कि उनके जल स्रोतों में कभी-कभार जलभराव होता है। घरेलू जल भंडारण पद्धतियाँ भी भिन्न-भिन्न हैं- 26 प्रतिशत ढके हुए कंटेनरों का उपयोग करते हैं, 6 प्रतिशत खुले कंटेनरों का, 40 प्रतिशत ओवरहेड टैंकों का, और 28 प्रतिशत अन्य माध्यमों पर निर्भर हैं, कई घरों में सुरक्षित भंडारण पद्धतियों को अपनाने के बाद भी जल प्रदूषण का जोखिम बना रहता है। जल निकासी प्रबंधन के संबंध में, 42 प्रतिशत ने बताया कि मानसून से पहले नालियों की सफाई की जाती है, 32 प्रतिशत ने कहा कि सफाई नहीं की जाती, और 26 प्रतिशत ने कहा कि कभी-कभार सफाई होती है, जो असंगत नागरिक प्रबंधन की ओर इशारा करता है। अंत में, जब बाढ़ के पानी के घरों में आने के बारे में पूछा गया, तो केवल 18 प्रतिशत ने इस समस्या का अनुभव होने की बात कही, जबकि 82 प्रतिशत ने कहा कि उनके घर अप्रभावित रहते हैं, जिससे यह उजागर होता है कि बाढ़ एक सामुदायिक स्तर का मुद्दा है, लेकिन घरों पर इसका सीधा प्रभाव काफी भिन्न होता है।

तालिका 2: जल के संबंध में सामुदायिक धारणाएँ

क्रम संख्या	धारणाएँ	प्रतिक्रियाएँ	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	क्या स्थिर जलभराव वाले क्षेत्र जल प्रदूषण के जोखिम को बढ़ाते हैं?	असहमत	0	0
		तटस्थ	17	34
		सहमत	33	66
2	उबालने या क्लोरीनीकरण से अधिकांश जलजनित रोगों को रोका जा सकता है।	असहमत	0	0
		तटस्थ	24	48
		सहमत	26	52
3	मानसून के दौरान नालियों की सफाई आवश्यक है।	असहमत	0	0
		तटस्थ	18	36
		सहमत	32	64

स्रोत: शोधार्थी द्वारा प्राथमिक सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित किए गए आँकड़े

जलभराव और स्वास्थ्य जोखिमों के बारे में उत्तरदाताओं की धारणा में गहरी जागरूकता को दर्शाती है। जब उनसे पूछा गया कि क्या स्थिर जलभराव वाले क्षेत्र जल प्रदूषण के जोखिम को बढ़ाते हैं, तो कोई भी इस कथन से असहमत नहीं था। 66 प्रतिशत लोगों ने सहमति व्यक्त की, जबकि 34 प्रतिशत तटस्थ रहे, यह दर्शाता है कि अधिकांश लोग स्थिर जल और प्रदूषण के बीच सीधे संबंध को पहचानते हैं, हालाँकि एक छोटा सा हिस्सा इस जोखिम की गंभीरता को पूरी तरह से नहीं समझता है। पीने के पानी को उबालने या क्लोरीनीकरण जैसे निवारक उपायों के मुद्दे पर, प्रतिक्रियाएँ अधिक विभाजित थीं 52 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत थे कि ये उपाय अधिकांश जलजनित बीमारियों को रोक सकते हैं, जबकि 48 प्रतिशत तटस्थ रहे, और कोई भी असहमत नहीं था। इससे पता चलता है कि यद्यपि कई परिवार शुद्धिकरण विधियों के लाभों को स्वीकार करते हैं, फिर भी एक बड़े वर्ग में उन्हें लागू करने में दृढ़ विश्वास या निरंतर अभ्यास का अभाव है। अंत में, जब मानसून के दौरान नालियों की सफाई के महत्व के बारे में पूछा गया, तो 64 प्रतिशत लोगों ने इस बात पर सहमति जताई कि नालियों की सफाई आवश्यक है, जबकि 36 प्रतिशत तटस्थ रहे, और किसी भी उत्तरदाता ने इससे असहमति नहीं जताई। इससे पता चलता है कि जहाँ समुदाय के सदस्य नालियों की सफाई जैसे निवारक उपायों का व्यापक रूप से समर्थन करते हैं, वहीं कमजोर नागरिक भागीदारी या बाहरी एजेंसियों पर निर्भरता के कारण कुछ लोगों में अभी भी उदासीनता है। आँकड़ों से पता चलता है कि ग्रामीण परिवार आमतौर पर जलभराव के जोखिमों और स्वच्छता के महत्व को समझते हैं, लेकिन व्यवहार और दृष्टिकोण आंशिक रूप से निष्क्रिय बने हुए हैं, जिसके लिए अधिक जागरूकता और सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

बराड़ा सामुदायिक विकास खंड के ग्रामीण क्षेत्र में जलभराव के अध्ययन से अपर्याप्त जल निकासी, दूषित जल स्रोतों और सामुदायिक स्वास्थ्य जोखिमों के बीच जटिल अंतर्संबन्ध पर प्रकाश डालता है। निष्कर्ष बताते हैं कि पाइप और हैंडपंप के पानी पर निर्भरता के बावजूद, कई स्रोत बाढ़ के संपर्क में हैं, जिससे उनके प्रदूषित क्षेत्र का खतरा बढ़ जाता है। जहाँ अधिकांश उत्तरदाता रुके हुए पानी के खतरों और नालियों की सफाई की आवश्यकता को समझते हैं, वहीं उबालने या क्लोरीनीकरण जैसी निवारक पद्धतियाँ असंगत रूप से अपनाई जाती हैं। यह स्थिति अधिक संस्थागत हस्तक्षेप, सामुदायिक भागीदारी और जागरूकता अभियानों की माँग करती है। ग्रामीण स्वास्थ्य और कल्याण की रक्षा के लिए स्थानीय जल निकासी प्रणालियों को मजबूत करना और सुरक्षित जल प्रथाओं को बढ़ावा देना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

- [1]. मजूमदार, टी., और अन्य (2024). दक्षिण एशियाई गाँव में जलजनित तीव्र दस्त रोग का प्रकोप: एक महामारी विज्ञान संबंधी जाँच. हेलियॉन।
- [2]. हरियाणा सरकार (2024, दिसंबर). हैंडबुक: जल गुणवत्ता. लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, हरियाणा।
- [3]. साहा, जे., और अन्य. (2024). ग्रामीण भारत में पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में बाढ़ और दस्त के बीच संबंध की खोज. आपदा चिकित्सा और जन स्वास्थ्य तैयारी।
- [4]. भारत सरकार (2024-2025). जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य पर राज्य कार्य योजना: हरियाणा. राज्य कार्यक्रम प्रबंधन एवं सहायता इकाई, एनसीडीसी-स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय।
- [5]. वेन्नु, वी., और अन्य (2024). भारत में पेयजल, स्वच्छता, सफाई और स्वास्थ्य की स्थिति: एक विस्तृत समीक्षा. पीएलओएस ग्लोबल पब्लिक हेल्थ।
- [6]. यांग, जेड., और अन्य (2024). बाढ़ से जुड़े मृत्यु दर और रुग्णता जोखिम: एक व्यवस्थित समीक्षा. पर्यावरण अनुसंधान।